IMPACT FACTOR
5.473(SJIF)

UPA NATIONAL E-JOURNAL
*Interdisciplinary Peer-Reviewed Journal*

ISSN
2455-4375

# जनजातीय लोक गीतों का सांस्कृतिक महत्व

**संतोष कुमार दुबे**
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
शासकीय महाविद्यालय बरगवाँ
जिला—सिंगरौली (म.प्र.)

---

जनजातीय लोक गीत केवल लोक गीत नही है वरन् जनजातियों की संस्कृति का प्रतीक है। इन लोकगीतों में जनजातियों को समस्त संस्कृति अभिव्यक्त होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो लोक गीत में मानव का समस्त जीवन व्यक्त होता है। जनजातीय लोक गीतों में शिशुओं के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न रूपों में जीवन का रंग मिलता है। लोकगीतों में भावों की अभिव्यक्ति स्वाभाविक है जो हृदय से निकली हुई लय के साथ होती है। जिस तरह जंगल में पक्षी उन्मुक्त होकर गाते हैं उसी तरह लोकगीत स्वाभाविक स्वरों में हृदय से फुट निकलते है। लोकगीत प्राकृतिक गान है। जिसमें लोक का समस्त जीवन व्यक्त होता है। जीवन की सच्ची झलक मिलती है। भाई—बहन का प्यार एवं विरह गाथा, युगल प्रेमियों का विरह एवं मिलन, आभूषण प्रेम, गरीबी आदि समस्त जीवन के भाव लोकगीतों में भरे पड़े हैं। वस्तुतः इनमें मानव के सुख—दुःख, मिलन, बिछुड़न का इतिहास है। कुल मिलाकर कहें तो जनजातीय लोकगीतों में जनजाति संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

सिंगरौली जिला जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है। इन अंचलों में जो जनजातीय गीत गाये जाते है उनमें प्रमुख रूप से करमा, सैला, रीना, जुआगीत, ददरिया, झूपा—झूपर, कहरवा, फाग आदि है। कुछ प्रमुख लोकगीत यहाँ देखे जा सकते हैं।

**"झूमा—झूमर"**

" ओ हो हाय चोला नहिं माने राम।
बिन देखे पराना चोला नही माने रे।

लोटो के तो पानी छुटगै, औ धारी के भात।
कोड़ा ढिगा बैठे—बैठे, कर जाथै या रात।

दादर झावर तोला ढूँढयों डोगर बीच मझाय।
सबे पतेरन तोला ढूँढवों, कहाँ लुके है जाय।

आमा के अमरैया कैसे औं कोदो खलिहान।
मन में घोखत—घोखत संगी हुई जबै बिहान।

चोला भीतर आगी बरथै, उपर ले गुगवावै।
असुवन के तो नदी बोहयै, जब्बे सुरता आवै।
कैसे मा ते माया छाड़ें, सुरता मोर भुलाये।

गल्ली खोरी ढूँढ़यो, हंसा रैन उड़ाई।।"

प्रीतम को देखे बिना ये प्रान नही मानते। विरह में खाना पीना सब छूट गया है। आग के पास बैठे–बैठे यह सारी रात कट जाती है। तुझे मैंने पहाड़ के दादरों में, पहाड़ के बीच में, जंगल की पतरोई में, सब जगह ढूँढा, तुम नही मिले, न जाने कहाँ जा के छिप गये हो।

**रमा लहकी :–**

"बारी के तूमा नार बेला–बेला रे चले आवे नार,
जब तक जिन्दगी है मोर।

करिया तो धोती किनारी नही आय हो SSहाय।
परदेशी जो हो गये चिन्हारी नही आयगा। बेला रे बेला।
आमा इमलिया देखत रहतेंव गहों SSहाय।
जिन्दगानी भर तोला हेरत रहतेंवग।। बेला रे बेला।।

नवा पिछौरी उलट खिलना हो SSहाय।
कबै हो ही चिरैया तोरे से मिलनाग।। बेला रे बेला।।

नवा सड़क मा बिछी है गिट्टी हो SSहा SS।
जहाँ रहवैं छबीला भिजावें चिट्टी। बेला रे बेला।।"

बाड़ी में लौकी है। जब तक मेरी जिन्दगी है उसी बेल के सहारे चले आना काली धोती में किनारे नही है। परदेशी तो गये हो, क्या पहचान नही है। आम और इमली को देखती रहूँगी। जीवन भर तुझे ढूढ़ती रहूँगी। नही पिछौरी है। उल्टा सिवावन लगा है। अरी प्रिया तुम से कब मिलना होगा। अरें छबीली तुम जहाँ रहोंगी जरूर चिट्ठी भेजना।

**करमा–लंगडा :–**

"भला झिन मारों राम, पोसे परौना ला झिन मारो रे।
श्रेनी के विनछा चुनैटी के चूना, पानी बिना मर जाय।।
भला झिन मारो रे।।

मग जावें पंछी तै तो दूर देशन मा न करबे सुरता हमार।
कपड़ा ला सिये ला दये तो दाजी, दाया माया ला राखों।।
करेजा भीतरी।।

संझा के बेरा उड़ै तो लावा, घर चलती के बेरा। लगाये माया।"

प्रेमी अपनी प्रेमिका से बिदा होकर घर जाने लगता है। तो कहता है पोसे हुए परेवा (पछी) को मत मारना। रेत में लगा वृक्ष और चुनैटी में रखा हुआ चूना पानी के बिना मर जाता है। उसी प्रकार यह प्रेमी बिना प्रेम के मर जायेगा। अरे पक्षी ! तू तो दूर बहुत दूर देशों में उड़ जायेगा और हमारी सुध नही लेगा। कपड़ा सीने को दर्जी को दे दो। परन्तु दया माया (प्रेम) कलेजे के भीतर ही रखना पड़ता है। शाम के समय लावा पक्षी उड़ते हैं, उसी तरह घर जाने के वक्त में माया लगा लिये यानी प्रेम कर लिये हो।

**सुआ गीत :–**

"री रीना री हलो रीना हो, री रीना री हलो आय।
की सुआ हो री रीना री हलो आय।।

वारी के ईर–तीर बोयों झलर धान हो।
हर नागर मिरग चरि जाय।।

री रीना री हलो रीना हो, री रीना री हलो आय।
की सुआ हो री रीना री हलो आय।।

हांको रे भैया अपने मिरग ला हो।
मै मारी बिदिंया भॅवाय।।

री रीना री हलो रीना हो, री रीना री हलो आय।
की सुआ हो री रीना री हलो आय।।

बिंदिया के मारे सिर कट जाये हो।
रक्तन के नदी बह जावे।।
री रीना री हलो रीना हो, री रीना री हलो आय।
की सुआ हो री रीना री हलो आय।।

हांको रे भैया अपने मिरग ला हो।
मै मारो पैरी भवांथ।।

री रीना री हलो रीना हो, री रीना री हलो आय।
की सुआ हो री रीना री हलो आय।।
पैरी के मारे सिर कटि जाय हो।
रक्तन की नदी बह जाये।।

**ददरिया :–**

"गायले गायले, बोतल के दारू कौन पीवे अलबेला जावन।

खिड़की ले बंगला ले, देखन को ही राम, रामै राम विरई बोले गए।।

मन माही सोचै शब्द रचना।
छाया बन के उत्तर में तुम्हारें सपना।।

पथरा के भीती मटकना डोर।
गाली बोली ला दै लै माया ला झनटोर।।

कुआँ के पानी झींकी के झींका होय।
दुरिहा ले चिरैया देखी के देखा होय।।

गैन्हे बजरिया लये ला चिमटा।
इन बातों के भैया झै करवै चिन्ता।।

खंडा मछरियाँ तोर घिव के बघार।
तेला राखो चिरैवा जिव के आधार।।

रोड़ी ते रोड़ी पतार रोड़ी पतर कनिहा के भैया,
मंजूर झाली गुस्सा झय होवे।
गुस्सा झय होवे माउ बेरा–बर के जात।
गुस्सा झय होवे दोल।।

तोरय जो बोली आय, तोला भजने सुनातौव।
रामायण धुन के तोला भजने सुनातौव।।

पानी ला पिये पियालान मा।
ददरिया ला गायले खियालन मा।।
तवा की रोटी खराई डाले।

**कहरवा गीत :–**

शादी के अवसर पर विदा के समय स्त्री पुरूष मिलकर गाते हुये नाचते हैं।

"लाली गुलाली डोली सजी है, पचरंग सजी रे बारात।
कौन गली से गोरी निकरगै, हँसत की रोवत जात।।

बारी के ईर तीर नीबू लगे हैं, और भला नीबू न टोरबे इमान।
नीबू में काँटे जड़े हैंरे, नीबू न टोर बेईमान।।

हरियर बाँस के लाल बिजनैया, अरे भला तेरा लहर मेरा नींद।
जरा बिजनैया डुला दे तेरा लहर मेरा नींद।।

या टोला वा टोला, बस्ती बसे हैं, अरे भला कौन टोला ढूंढन जाउ।
छैला को लगे बिलैया कौन टोला ढूंढने जाउँ।।"

**परधौनी गीत :–**

"हाथी मोरे घोड़ा मारे लात तरियर।

मेला रवव के पटोंय देवें।।

मुंगेली बजार।

रीवा के रानी रौधे।।"

बारात के आगवानी के समय परधौनी की जाती है। खटियाँ का हाथी तैयार है। बाराती परधौनी गीत गा रहें हैं। यह हाथी, घोड़ा लात मारेगा वधू पक्ष के लोग इस हाथी पर बैठ जावो और वधू के नेग में पैसा दो। जिनके पास पैसा नही है। वह मुगेंली बाजार से खाने का समान लाओ जिसे रीवा की महारानी बनायेंगी।

**प्रेम गीत :–**

"अगती जुघईयाँ रात राजा कैसे माय।

मोर पिया कहाँ रोये।।

आवत रहे जावत रहें।

आधा गली भेट हो गये।।

रात राजा कैसे आये।"

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है जनजाति क लोगों को यात्रा में लोकगीत समाया हुआ होता है। सुख से या दुःख हर परिस्थिति में लोकगीत इनके जीवन के साथ–साथ होते हैं। ये प्रकृतिगान हैं। लोकगीतों का प्रायः मौखिक चलन होता है। इनके सीखने वाले का नाम नही होता। संगीत इनका शरीर है और भाव इनकी आत्मा है। इनकी शैली सरल होती है और इनका लोच तत्व प्रधान होता है। सहज, स्वाभाविक, स्वच्छन्दता एवं सरलता लोकगती के गुण हैं। कुल मिलाकर कहें तो जनजातीय लोकगीत जनजाति समाज की एक पहचान है।

**<u>संदर्भ</u> <u>सूची</u> –**


- गोड़ जनजातीय गीत – रूप सिंह कुशराम
- आदिवासी लोकगीत – पं. गिरिजा शंकर अग्रवाल
- मध्यप्रदेश का लोकसंगीत – शरीफ मोहम्मद
- सामाजिक संदर्भों में गोड़ी संस्कृति का इतिहास – डॉ. लीखा भलावी
- निजी संग्रह से प्राप्त लोकगीत